Knowledgeable Research (KR) 2026, Special Vol., (5):01
ISSN: 2583-6633, CODEN: KRABAU
International open-access peer-reviewed refereed monthly journal
https://knowledgeableresearch.com/index.php/1

युवा पीढ़ी और हिंदी साहित्य : तकनीक का प्रभाव

प्रा. चित्रा संभाजी जोंधळे*
शोधछात्र– एम.ए, एम.फिल, सेट, नेट (हिंदी)
पीपल्स कॉलेज,नांदेड

शोध सार

वर्तमान समय डिजिटल युग से प्रभावित है जाहिर है कि इस समय में डिजिटाइजेशन का प्रयोग अत्यधिक रूप में किया जा रहा है। कागज़ी रेकॉर्ड, नक़द लेन-देन हो अथवा कार्यालयों में दस्तावेज़ रखने की प्रक्रिया सभी का डिजिटाइजेशन वर्तमान समय की मांग है। इस प्रणाली में कृत्रिम मेधा अर्थात AI का अत्यधिक रूप में प्रयोग किया जा रहा है। वर्तमान डिजिटल युग में कृत्रिम मेधा मानव जीवन के साथ-साथ साहित्य के क्षेत्र में भी न केवल निर्णायक भूमिका निभा रहा है अपितु कृत्रिम मेधा ने साहित्य के रचनात्मक क्षेत्र में भी हस्तक्षेप किया है जिसे तत्कालीन शोध नें स्पष्ट किया है। साहित्य को जहां अनुभव, मानवीय संवेदना और कल्पनाशीलता का क्षेत्र माना जाता रहा है वही साहित्य आज के समय में कृत्रिम मेधा के प्रभाव से नई संभावनाओं के साथ कई चुनौतियों का सामना भी कर रहा है। कृत्रिम मेधा AI के प्रभाव से साहित्य पर कुछ सकारात्मक तो कुछ नकारात्मक प्रभाव भी परिलक्षित होता दिखाई देता है। विवेच्य शोध-पत्र में साहित्य की रचनात्मकता पर कृत्रिम मेघा के प्रभाव पर प्रकाश डाला गया है।

बीज शब्द: रचनात्मकता, कृत्रिम मेधा, कंप्यूटर, टूल्स, जेनरेटिव, सकारात्मक, नकारात्मक, संवेदना, अनुवाद, विकल्प।

Received: 03/12/2025
Accepted: 17/01/2026
Published: 31/01/2026

***Corresponding Author:**
प्रा. चित्रा संभाजी जोंधळे
Email:

वर्तमान समय में जब हम युवा और हिंदी साहित्य को देखते हैं तो हमें यह ज्ञात होता है कि, आज के युवा साहित्य में रुचि भी रखते हैं, जब उनको अपने रोजगार के लिए साहित्यिक अध्ययन करना पड़ता है ये युवा शैक्षणिक अध्ययन करते हैं। तभी वह साहित्य को पढ़ना उचित समझते हैं। अन्यथा आज की युवा पीढ़ी ज्यादातर साहित्य में रुचि नहीं लेती। जब हम अस्सी के दशक के और नब्बे के दशक के युवाओं को देखते हैं तो यह प्रतीत होता है कि वह युवा जो पहले भाषा के माध्यम से साहित्य से जुड़े रहते थे। तब बच्चों को बचपन से ही साहित्य में रुचि होती थी। क्योंकि उनकी मां, दादी उनको बचपन से ही कहानियां सुनाती थी। और उन कहानियों का रूपांतरण आगे चलकर उनकी साहित्यिक रुचि में होता हुआ दिखाई देता था। तब के युवा अलग-अलग साहित्य को पढ़ते थे। उनको पढ़ने के लिए साप्ताहिक हिंदुस्तान, दिनमान, धर्मयुग, कादम्बिनी, सरिता, हिंदी नवनीत जैसे पत्रिकाएं होती थीं और इन पत्रिकाओं में युवाओं को पढ़ने के लिए, लिखने के लिए, एक कॉलम होता था। युवा लेखन कर ज्यादातर उसमें भाग लेते थे। तब युवाओं में साहित्य को पढ़ना उनकी रुचि बन गई थी। तब हिंदी की पत्रिकाओं के माध्यम से युवा ज्यादातर साहित्य से जुड़े रहते थे। अब मानो यह पत्रिकाएं भी ज्यादातर पटल से गायब होती दिखाई दे रही हैं। अब के युवा अपने आवश्यकता अनुसार साहित्य को पढ़ना पसंद करते हैं।

हिंदी साहित्य और युवा पीढ़ी -

साहित्य समय और कालखंड के अनुसार बदलता है। साहित्य हितकारी है। आज की युवाओं के लिए साहित्य पढ़नेकिताबें पत्रिकाएं उनकी आवश्यकता नहीं है क्योंकि आज के वर्तमान समय में साहित्य तकनीकी हो गया है इस तकनीक के कारण आज हम घर बैठे बहुत कुछ सीख सकते हैं आज साहित्यट्विटरफेसबुकइंस्टाग्राम गूगल आदि आधुनिक तकनीक पर ज्यादा साहित्य दिखाई देता है इससे हमें यह ज्ञात होता है कि साहित्य हमेशा समय को परिभाषित करता है और समय के अनुसार साहित्य में बदलाव आते हैं साहित्य कल्याणकारी होता है और इसी के कारण युवा पीढ़ी साहित्य से ज्यादा निकट हो गई है इसका एक में एवं मध्यम यह तकनीक है इसी के कारण युवाएं ज्यादातर साहित्य को

ऑनलाइन माध्यम से ही अध्ययन कर रहे है।इसका और एक कारण हम यह कर सकते हैं कि आज के युवा तकनीक का उपयोग करते हैं और इस टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में ज्ञान का विस्फोट हुआ है इसी से युवाओं को अपनी रुचि अनुसार अपने समय के अनुसार साहित्य को सृजन करने में आसानी हो रही है यह भी तकनीक का ही प्रभाव हम यहां पर कह सकते है।पहले की पीढ़ियां परंपरा, संस्कार, संस्कृति और 'लोग क्या कहेंगे' के बोझ के नीचे जी रही थीं। नयी युवा पीढ़ी बंधनों को तोड़ने और कुछ नया करने की कोशिश कर रही है।

साहित्य जनता की चित्तवृत्तियों का संचित प्रतिबिम्ब होता है " -यह कथन है आचार्य रामचंद्र जी शुक्ल का। कितना सही कहा है आचार्य जी ने। वर्तमान में साहित्य के, युवा वर्ग के और उससे जुड़े सरोकार के अर्थ पूरी तरह बदल गए हैं। समय बदल गया है। लेखन बदल गया है और इससे अधिक युवा पीढ़ी की सोच बदल गई है। पाठ्यक्रमों से सद्-साहित्य नदारद है। पढ़ने-पढ़ाने का सिलसिला लगभग खत्म हो गया है। अब हर जरूरत के लिए " गूगल पंडित" मौजूद है। शिक्षाप्रद साहित्य का स्थान मनोरंजक साहित्य ने ले लिया है।

हिंदी साहित्य और युवा पर तकनीक का प्रभाव -

हिंदी साहित्य को तकनीकी माध्यमों के जरिए पाठकों तक पहुंचने का काम बहुत सारे लेखकों ने प्रकाश को ने किया है। आज हर एक प्रकाशित लेख, किताब हमें नईतकनीक के कारण इंटरनेट के माध्यम से सॉफ्ट कॉपी के रूप में वह एक ही जगह बैठकर आसानी से मिल रही है और इसी के माध्यम से हम साहित्य को पढ़सकते है।आज के युवाओं के पास समय की कमी होने के कारण वह ज्यादा किताबें पढ़ना पसंद नहीं करते। उनको जब कोई भी परीक्षा पास करनी हो तभी वोसाहित्य को पढ़ना पसंद करते है। साहित्य केछात्र जब भी उनकी परीक्षाएं होती हैया कक्षाएं चलती है, तब वह साहित्य का अध्ययन करते है।युवासाहित्य का अध्ययन तभी करते हैं जब उनको रोजगार के लिए या किसी भी प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए हिंदी साहित्य का पेपर आता है।उसेहिंदी साहित्य का इतिहास पूर्ण रूप से पढ़नाकरना पड़ता है, तब वह साहित्य का अध्ययन करते है।

आज के युवा वर्ग जब पुस्तकालय में जाते हैं तो वह वही किताबें देखते है जो उनके परीक्षा उपयोगी होते हैं कुछ युवाएं नौकरी के अवसरों के कारण ही पुस्तकालय में जाते हैं और वही किताबें पढ़ते है, जो उनके नौकरी के सिलेबस में लगी हुई होती है। जिसमें - एनसीईआरटी की किताबें, हिंदी साहित्य का इतिहास आदिविषय पर वह अध्ययन करना पसंद करते है।यह कहने में कोई दिक्कत नहीं होगी कि, आज के युवा साहित्य कोकाम चलावुसाहित्य यह मानते हुए साहित्य का अध्ययन कर रहे है।दूसरी बात यह है कि, जब साहित्य की भाषा सरल हो और वह आसानी से साहित्य हमें मिले तब भी युवासाहित्य को पढ़ते है।युवाओं के लिए अपने समय के अनुसार जो साहित्य होता है वह उसी को पढ़ते है। जैसे कि आजकल अनुवादित साहित्य मिल रहा है उसको ज्यादा युवा ही अध्ययन कर रहे है।

हिंदी साहित्य का अध्ययन करते समय आज के वर्तमान युग में नई तकनीक का प्रभाव अत्यधिक युवाओं में देखने को मिलता है। इसी के कारण आज के युवानईतकनीक का उपयोग कर अपने विचारों का आदान-प्रदान करते है। जिसमें तकनीक के माध्यम अलग-अलग प्रकार के जैसेनए माध्यमपॉडकास्ट, यूट्यूब, और सोशल मीडिया पर हिंदी साहित्य की चर्चा और रचनाएँ हो रही हैं, जो इसे अधिक आकर्षक बनाती है। तकनीक का प्रभाव आज केयुवा पर है।परंतु समय के अनुसार तकनीक का सकारात्मकऔर नकारात्मक प्रभाव हमें देखने को मिलता है।

युवाओं पर तकनीक का सकारात्मक प्रभाव–

आधुनिक तकनीक के कारण आज हम अनेक भाषाओं में पढ़ सकते है। और किसी भी भाषा की किताब हमें पढ़ने में दिक्कत ना हो इसीलिए उसका हमें अनुवादित रूपांतरण इस तकनीक के माध्यम से मिलता है।हिंदी के साथ-साथ अंग्रेज़ी और अन्य भाषाओं का मिश्रण देखने को मिलता है, जिसे हम 'हिंग्लिश' भी कहते हैं। यह भाषा का नया रूप युवाओं के बीच लोकप्रिय है।इस हिंग्लिश' को पढ़ते-पढ़ते आज के युवा हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं को मिलाकर कर अपने बोलचाल में हिंग्लिश' भाषा का उपयोग कर रहे है। उनकी भाषा सुधारने में हमें आगे बढ़कर हिंदी मेंइस डिजिटल युग में एक ऐसा माध्यमहो जिससे हम हिंग्लिशभाषा का प्रयोग न करते हुए शुद्ध हिंदी में हम अपने विचारों को प्रकट कर सके, अपनी भाषा को सुधार सके और शुद्ध हिंदी में वार्तालाप कर सके इस पर ज्यादातर हमें ध्यान देना होगा।हिंदी साहित्य, फिल्में, संगीत और सोशल मीडिया युवाओं को हिंदी भाषा से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। ये माध्यम युवाओं को हिंदी भाषा के प्रति आकर्षित करते है और उनकी भाषा कौशल को बढ़ावा देते है।युवाओं को हिंदी भाषा के प्रति जागरूक और प्रेरित करने के लिए शिक्षा और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन आवश्यक है ताकि हिंदी भाषा जीवित और प्रासंगिक बनी रहे।इंटरनेट और डिजिटलप्लेटफॉर्म्स (ई-बुक्स, ऐप्स) से युवा आसानी से हिंदी साहित्य पढ़ और एक्सेस कर सकते हैं।हिंदी साहित्य में तकनीक के कारण आजकेयुवा लेखकों को मंचमिला है जिसके कारण युवा लेखक अब डिजिटल माध्यमों से अपनी बात रख रहे हैं, जिससे लेखन में विविधता आई है।तकनीक ने भाषा

Copyright: © The authors. This article is open access and licensed under the terms of the Creative Commons Attribution License (CC BY)

केआधुनिकीकरणहिंदी को और भी सरल और 'कूल' बनाया है, जिससे यह युवाओं के करीब आईहै।सोशल मीडिया आधुनिक युग की आवश्यकता है। इसका प्रभाव युवा पीढ़ी पर गहरा है।

युवाओं पर तकनीक का नकारात्मक प्रभाव –

युवाओं में हिंदी साहित्य के प्रति घटती रुचि और अंग्रेजी साहित्य की ओर झुकाव एक बड़ी चुनौती है। सोशल मीडिया के शोरगुल में अच्छी और सार्थक रचनाएं खो जाती हैं, और युवाओं का ध्यान भटकता है।शिक्षा में अंग्रेजी को प्राथमिकता देने से हिंदी का महत्व कम हो रहा है।स्पष्ट है कि AI-जनित सामग्री का एक बड़ा नुकसान मानवीय पहलू का अभाव है। लेखन एक कला है जिसे उसकी मानवीयता और वास्तविकता के लिए महत्त्व दिया जाता है। AI सुझाव और विचार दे सकता है, लेकिन इसमें लेखक जैसा मानव ज्ञान नहीं होता। किसी भी रचना के लिए मौलिक विचार और भाव आवश्यक हैं जो AI नहीं उत्पन्न कर सकता।तकनीकीभाषा आकर्षक हो सकती है लेकिन वह अक्सर इंसानी मनोभावों, सांस्कृतिक संदर्भों और निजी अनुभवों से अनभिज्ञ होती है। । AI द्वारा किया गया लेखन मौलिक नहीं होने के कारण उस पर साहित्यिक चोरी की तोहमत लगना भी संभव है। बहुत संभव है कि आने वाले समय में AI स्वतंत्र लेखन के बजाय लेखकों की कल्पनाशीलता को बढ़ाने का माध्यम बना रहे।

तकनीकीमें युवा लेखकों काप्रोत्साहन,समाधान और संभावनाएं:

साहित्य को डिजिटलप्लेटफॉर्म्स पर लाना, ऑडियोबुक्स और पॉडकास्ट बनाना।पॉप संस्कृति से जुड़ावःक्लासिककहानियों को आधुनिक बनाना और उन्हें पॉपकल्चर (फिल्में, वेबसीरीज) से जोड़ना।युवाओं को मंच देना ताकि वे समकालीन मुद्दों पर लिख सकें और पुरानी पीढ़ी से संवाद कर सकें।बहुभाषी होने के फायदे समझना और हिंदी को "कूल" बनाने के तरीके खोजना, ताकि भाषा लचीली बनी रहे। तकनीक ने हिंदी साहित्य के लिए नए रास्ते खोले हैं, लेकिन इसे प्रासंगिक बनाए रखने के लिए पारंपरिक और डिजिटल माध्यमों के बीच संतुलन बनाना और युवाओं की बदलती पसंद को समझना ज़रूरी है।अब तकनीक की वजह से फ़ेसबुक, इंस्टाग्राम और यूट्यूब जैसे मंचों पर हिंदी सामग्री का सैलाब आया है। ब्लॉग, कविताएँ, कहानियाँ और विचार हिंदी में अभिव्यक्त हो रहे हैं। यहाँ भाषा किसी व्याकरण के बंधन में नहीं, बल्कि जन-जन की भावना बनकर प्रवाहित हो रही है।

निष्कर्ष :

निष्कर्षत: हम यह कर सकते हैं कि, युवा पीढ़ी पर हिंदी साहित्य का प्रभाव तो है ही परंतु आज के समय में सबसे ज्यादा तकनीक का प्रभाव है।डिजिटल माध्यमों के कारण आज की युवा पीढ़ी अपने विचारों का आदान-प्रदान कर सकती है।तकनीक के कारण आजयुवाएं विभिन्न क्षेत्र में, विभिन्न भाषाओं में और विभिन्न तकनीक का उपयोग कर समय के साथ आगे पढ़ रहे है। तकनीक ने युवाओं केलिएनए अवसर प्रदान किए है।जिसके माध्यम से वह रोजगार भी कर रहे।यदि इसका उपयोग सही दिशा में किया जाए तो यह ज्ञान, प्रगति और अवसरों का माध्यम बन सकता है, लेकिन दुरुपयोग करने पर यह समय की बर्बादी और नुकसान का कारण भी है। इसलिए आवश्यक है कि युवा पीढ़ी तकनीक का उपयोग संयम और समझदारी से करे।

संदर्भ –

१.साहित्य कलशतथा व्यापारिक हिंदी

२.परिचर्चा : युवा परिवेशमें हिंदी का महत्व।

३.युवाऔरसाहित्य – जयानंदन– Rajpal& sons YouTube channel

४.साहित्यिकी– युवावर्गऔर साहित्यिक अभिरुचि –Dudarshan Utter pradesh

५.युवापीढ़ी और साहित्य– नमस्तेयूपी।

६.नईयुवापीढ़ी का बढ़तारूझान साहित्यकी ओर– दिलिपजोशी।

७.साहित्य सेयुवा पीढ़ी का लगावऔर उसका प्रभाव – कल, आजऔर कल–Abhinash das

८.डिजिटल युग–अंजलि कार्यालय पटना।